HISTORY

B.A.(Hon's)PART–I

Paper–I (Ancient Indian History)

Unit–I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series – 18

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें ☐☐☐

https://youtu.be/3y6yl_CVCcM

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग– 8)

विदेशियों यात्रियों और लेखकों का विवरण (FOREIGNERS ACCOUNT)

विदेशी यात्री एवं लेखकों के विवरण से भी हमें भारतीय इतिहास की जानकारी मिली है। इसको तीन भागों में बाटा गया है:–

1. यूनानी–रोमन लेखक 2. चीनी लेखक 3. अरबी लेखक।

यूनानी लेखकों को तीन भागों में बांटा जा सकता है:–

(क)सिकन्दर के पूर्व के यूनानी लेखक

(ख)सिकन्दर के समकालीन लेखक,

(ग) सिकन्दर के बाद के लेखक।

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

टेसियस और हेरोडोटस यूनान और रोम के प्राचीन लेखकों में से है। टेसियस ईरानी राजवैद्य था, उसने भारत के विषय में समस्त जानकारी ईरानी अधिकारियों से प्राप्त की थी। हेरोडोटस, जिसे इतिहास का पिता कहा जाता है, ने 5 वीं शताब्दी ई०पू० में हिस्टोरिका' नामक पुस्तक की रचना की जिसमें भारत और फारस के सम्बन्धों का वर्णन किया गया है।

नियार्कस, आनेसिकिटस और अरिस्टोबुलास ये सभी लेखक सिकन्दर के समकालीन थे, इन लेखकों द्वारा जो भी विवरण तत्कालीन भारतीय इतिहास से जुड़ा है। वह अपने में प्रामाणिक है।

सिकन्दर के बाद के लेखकों में महत्वपूर्ण था– मेगस्थनीज जो यूनानी राजा सेल्यूकस का राजदूत था। उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में करीब 4 वर्ष बिताया। उसने इण्डिका नामक ग्रंथ की रचना की। उसमें तत्कालीन मौर्यवंशीय समाज एवं संस्कृति का विवरण दिया गया है। डाइमेकस सीरियन नरेश अन्टियोकस का राजदूत था, जो बिन्दुसार के राजदरबार में काफी दिन तक रहा।

डायोनिसियस मिस्र नरेश टॉलमी फिलाडेल्फस के राजदूत के रूप में काफी दिन तक सम्राट अशोक के राजदरबार में रहा था।

अन्य पुस्तकों में 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी', टॉलेमी का भूगोल, प्लिनी का नेचुरल हिस्टोरिका (ई.की प्रथम सदी) है।

'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' जिसकी रचना 80 से 115 ई० के बीच हुई है, इसमें भारतीय बन्दरगाहो, व्यापारिक वस्तुओं का विवरण मिलता है । प्लिनी के 'नेचुरल हिस्टोरिका से भारतीय पशु, पेड़ पौधे एवं खनिज पदार्थों की जानकारी मिलती है।

✓ **चीनी लेखक:–** चीनी लेखकों के विवरण से भी भारतीय इतिहास पर प्रचुर प्रभाव पड़ता है। सभी चीनी यात्री बौद्ध मतानुयायी थे और वे भारत में इस धर्म के विषय में कुछ विशेष जानकारी के लिए ही आये थे। चीनी बौद्ध यात्रियों में से प्रमुख थे– फाहायान, ह्वेनसांग, ह्वूली, इत्सिंग, मात्वानलिन, चाऊ–जू–कुआ आदि ।

फाह्यान गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय (375–415) के समय में भारत आया था। उसने तत्कालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला। फाह्यान ने विशेष रूप से बौद्ध धर्म पर लिखा है।

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

ह्वेनसांग कनौज के राजा हर्षवर्धन (606–647) के शासनकाल में भारत आया। इसने करीब 10 वर्षों तक भारत में भ्रमण किया। उसने 6 वर्षों तक नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। उसकी भारत यात्रा का वृत्तान्त सी–यू–की नाम के ग्रंथ से जाना जाता है। जिसमें करीब 138 देशों के यात्रा विवरण का जिक्र मिलता है। इससे हर्षकालीन सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

ह्वूली ह्वेनसांग का पुत्र था जिसने ह्वेनसांग की जीवनी लिखी। इस जीवनी में उसने तत्कालीन भारत पर भी प्रकाश डाला।

इत्सिंग (613–715) के लगभग भारत आया । इसने नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा उस समय के भारत पर प्रकाश डाला।

मात्वान–लिन ने हर्ष के पूर्वी अभियान एवं चाऊ–जू–कुआ ने चोल कालीन इतिहास पर प्रकाश डाला।

✓ **अरबी लेखक–** पूर्व मध्यकालीन भारत के समाज और संस्कृति के विषयों में हमें सर्वप्रथम अरब व्यापारियों एवं लेखकों से विवरण प्राप्त होता है। इन व्यापारियों और लेखकों में मुख्य हैं– अलबरूनी, सुलेमान, अलमसूदी ।

अलबरूनी जो अबूरिहान नाम से भी जाना जाता था, 973 में ख्वारिज्म (खीवा) में पैदा हुआ। 1017 में ख्वारिज्म को महमूद गजनवी द्वारा जीते जाने पर अलबरूनी को उसने राज्य ज्योतिष पद पर नियुक्त किया। बाद में महमूद के साथ अलबरूनी भारत आया। इसने अपनी पुस्तक 'तहकीक–ए–हिन्द' अर्थात् किताबुल हिंद में राजपूत कालीन समाज, धर्म, रीति–रिवाज आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला।

9 वीं शताब्दी में भारत आने वाला अरबी यात्री सुलेमान प्रतिहार एवं पाल शासकों के तत्तकालीन आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक दशा का वर्णन करता है।

915–16 ई. में भारत की यात्रा करने वाला बगदाद का यह यात्री अल मसूदी, राष्ट्रकूट एवं प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी देता है।

उपयुक्त विदेशी यात्रियों के विवरण के अतिरिक्त कुछ

✓ **फारसी लेखकों** के विवरण भी प्राप्त होते हैं। जिनसे भारतीय इतिहास के अध्ययन में काफी सहायता मिलती है। इनमें महत्वपूर्ण – फिरदौसी (940–1020) कृत शाहनामा (Book of

Dr. GUDDI KUMARI (A.N.D COLLEGE)

King), रशीदुदीन कृत 'जमीएत अल तवारीख', अली अहमद कृत – चाचनामा, मिनहाज–उस–सिराज कृत तबकात ए नासिरी, जियाउद्दीन बरनी कृत 'तारीख–ए–फिरोजशाही' एवं अबुल फजल कृत अकबरनामा' आदि।

✓ **यूरोपीय यात्रियों** में 13 वीं शताब्दी में वेनिस (इटली) से आये सुप्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो द्वारा दक्षिण के पाण्ड्य राज्य के विषय में जानकारी मिलती है।

आगे भी यह जारी है......

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)